प्रादर्श प्रश्न पत्र 2012

विषय – विशिष्ट हिन्दी

कक्षा – दसवीं

समय– 3 घंटे **पूर्णांक– 100**

निर्देश–

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है।
2. प्रत्येक प्रश्न के लिए आवंटित अंक उनके सामने अंकित है।
3. प्रश्न क्र. 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए है। प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 x 5 x 5 = 25 अंक निर्धारित है।
4. प्रश्न क्र. 6 से 15 तक में प्रत्येक का उत्तर लगभग 50 से 75 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 4 अंक निर्धारित है।
5. प्रश्न क्र. 16 से 20 तक में प्रत्येक का उत्तर 100 से 120 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 5 अंक निर्धारित है।
6. प्रश्न क्र. 21 का उत्तर लगभग 250/300 शब्दों में लिखिए। इसके लिए 10 अंक निर्धारित है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द का चयन कर कीजिए।

(i) मो सम कौन.....खलकामी।

(कुटिल/जटिल)

(ii) 'पदमावत' के रचियता .....है।

(मलिक मोहम्मद जायसी/जयशंकर प्रसाद)

(iii) .....स्वामी विवेकानन्द की शिष्या थी।

(भगिनी निवेदिता/अरूणधती)

(iv) प्रजापति में.....समास है।

(तत्पुरूष / द्वन्द्व)

(v) करूण रस का स्थायी भाव.....है।

(शोक / उत्साह)

प्रश्न 2. निम्नलिखित कथनों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए :–

(अ) नागार्जुन ने हिमालय की झीलों में किसे तैरते हुए देखा है–

(क) हंस (ख) बतख

(ग) मगरमच्छ (ग) मछली

(ब) मानव को मानव किसने बनाया–

(क) गेंदा (ख) चंपा

(ग) गुलाब (घ) चमेली

(स) शल्य–चिकित्सा के प्रवर्तक कौन थे –

(क) आर्यभट्ट (ख) सुश्रुत

(ग) नागार्जुन (घ) चरक

(द) गीतिका छंद में मात्राएं होती है –

(क) 20 मात्राएं (ख) 26 मात्राएं

(ग) 28 मात्राएं (घ) 30 मात्राएं

(इ) तत्पुरूष समास का उदाहरण है –

(क) नीलमणि (ख) रसोईघर

(ग) लेन–देन (घ) गजानन

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य / असत्य बताइये –

1. पद्माकर रीतिकाल के प्रमुख कवि है।
2. 'रामधारी सिंह दिनकर' छायावाद के प्रवर्तक कवि माने जाते है।
3. परम्परा एक से दूसरे को दूसरे से तीसरे को दिया जाने वाला क्रम है।

4. 'तेरे घर पहिले होता विश्व सवेरा' के रचियता श्री मैथिलीशरण गुप्त है।

5. प्रबंध काव्य में पूर्वोत्तर संबंध होता है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्यांशों की सही जोड़ी बनाइये–

	क	–	**ख**
1.	बिहारी सतसई	–	हरिकृष्ण प्रेमी
2.	हास्य रस का स्थायी भाव	–	रात्रि में विचरण करने वाला
3.	निशाचर	–	हरिशंकर परसाई
4.	निंदा रस	–	ह्रास
5.	मातृभूमि का मान	–	बिहारी

प्रश्न 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए –

1. सुजान सागर के रचियता का नाम लिखिए?
2. गेहूं और गुलाब पाठ के लेखक का नाम है?
3. जिस काव्य में जीवन का विस्तृत चित्रण होता है?
4. महर्षि शब्द का संधि विच्छेद होगा?
5. पुराणों के अनुसार नर्मदा का उद्‌गम स्थल है?

प्रश्न 6. सूरदास ने स्वयं को कुटिल खलगामी क्यों कहा है?

अथवा

निशाकाल से चिर अभिशापित किसे कहा गया है?

प्रश्न 7. सम्मानीय होने के लिए किन गुणों का होना आवश्यक है?

अथवा

'लोक कल्याण कामना' से कवि का क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 8. रीतिकाल की प्रमुख दो विशेषताएं लिखते हुए दो रीतिकालीन कवियों एवं उनकी एक–एक रचना का नाम लिखिए।

अथवा

छायावाद की प्रमुख चार विशेषताएं लिखिए।

प्रश्न 9. नाटक और एकांकी में प्रमुख चार उत्तर लिखिए।

अथवा

भारतेन्दु युग को हिन्दी गद्य का जनक क्यों कहा गया है?

प्रश्न 10. मनुष्य पशु से किस प्रकार भिन्न है?

अथवा

संयम की परिभाषा क्या है? लेखक के विचारों को लिखिए।

प्रश्न 11. बैल को बेचने के लिये मोहन ने शिबू से क्या कहा?

अथवा

कवि ने बेटियों को गौरव–कथाएं क्यों कहा है?

प्रश्न 12. खण्डकाव्य की कोई तीन विशेषताएं बताते हुए दो खण्डकाव्य रचनाओं के नाम लिखिए।

अथवा

रोला छंद का लक्षण लिखते हुए एक उदाहरण लिखिए।

प्रश्न 13.(अ) निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों का शुद्ध रूप लिखिए।

(i) सोनू को फेल होने की आशा है।

(ii) मुझसे अनेको भूलें हुई।

(iii) मैने गाते हुए लता मंगेशकर को देखा है।

(ब) निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित रूप में लिखिए।

1. नेहा पुस्तक पढ़ती है। (आदेशात्मक)
2. वह परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। (प्रश्नवाचक)

अथवा

(अ) निम्नलिखित शब्द समूह के लिये एक शब्द लिखिए।

1. जो जन्म से अंधा हो।
2. शत्रु का नाश करने वाला।
3. विशेष ज्ञान रखने वाला।

(ब) द्विगु समाज की परिभाषा लिखकर दो उदाहरण लिखिए।

प्रश्न 14. हजारी प्रसाद द्विवेदी अथवा वासुदेव शरण अग्रवाल का साहित्यिक परिचय निम्न बिंदुओं के आधार पर लिखिए :–

1. दो रचनाएँ
2. भाषा शैली
3. साहित्य में स्थान

प्रश्न 15. तुलसीदास अथवा रामधारी सिंह दिनकर की काव्यगत विशेषताएँ निम्न बिन्दुओं के आधार पर लिखिए।

1. दो रचनाएँ,
2. भावपक्ष, कला पक्ष,
3. साहित्य में स्थान

प्रश्न 16. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :–

हमारे प्रभु औगुन चित्त न धरौ।
समदरसी है नाम तुम्हारौ, सोई पार करौ।

इक लोहा पूजा में राखत, एक घर बधिर परौ।
सो दुविधा पारस नहि जानत, कंचन करत खरौ।
इक नदिया, इक नार कहावत, मैलौ नीर भरौ।
जब दोअ मिलि एक बरन भए, सुरसरि नाम परौ।
तन माया ज्यों ब्रहम कहावत, सूई सुमिति बिगरौ।
कै इनको निरधार कीजिए, कै प्रन जात टरौ।

अथवा

दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाऊं न रहत निदान।
ठाऊं न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे वचन सुनाय, विनय सबही की कीजै।
कहे गिरधर कविराय, अरे यह सब घट दौलत।
पहल निसि दिन चारि, राहत सबही के दौलत।

प्रश्न 17. निम्न लिखित में से किसी एक गद्यांश की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिएः—

आधुनिकता 'सम्प्रदाय' का विरोध करती है, क्योंकि आधुनिकता गतिशील प्रक्रिया है, सम्प्रदाय स्थिति संरक्षक। परंतु परम्परा से आधुनिकता का वैसा विरोध नहीं होता। दोनों की गतिशील प्रक्रियाएं है। दोनों में अंतर केवल इतना है कि परम्परा यात्रा के बीच पड़ा अंतिम चरण है, जबकि आधुनिकता आगे बढ़ा हुआ गतिशील कदम है।

अथवा

मन की एकाग्रता की समस्या सनातन है आज के प्रौद्योगिकी युग में जहां भौतिक उन्नति की संभावनएं अपार है ऐसे में छात्र जब अध्ययन करने बैठता है तब उसके मन को अनेक तरह के विचार घेरने लगते है। वह सोचता है इस अर्थप्रधान युग में मुझे उत्कृष्ठ पद प्राप्ति के लिए एकाग्र मन से पढ़कर परीक्षा

में उच्चतम श्रेणी प्राप्त करना आवश्यक है। लेकिन वह जब पढ़ने बैठता है तो क्रिकेट, सिनेमा या मित्र मण्डली की मौज मस्ती के विचार में उसका मन भटकरने लगता है। मन का यह विचलन, बुद्धि की एकाग्रता भंग कर देता है।

प्रश्न 18. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

शिष्टाचार विहीन मनुष्य का समाज में बहिष्कार होता है और उसका जीवन एकाकी बन जाता है ऐसी दशा में वह जीना भी नहीं चाहता और सदा खिन्न रहता है उसे समाज में कहीं अच्छी ठौर नहीं मिलती, इस कारण वह कुसंगति में पड़ जाता है। कुसंग में सुख और भक्ति कहां? कुसंग में जीवन पतनशील बन जाता है। कितने दुख और शोक की बात है कि पतित मनुष्य कार्य हीअपने अमूल्य जीवन को निरर्थक बना देता है। वह नाना प्रकार के अपवाद, ग्लानि और चिंताओं को समेटकर अधोगामी होता हुआ अन्त में काल कवलित होता है।

प्रश्न 1. उपर्युक्त अवतरण का सारांश अपनी भाषा में लिखिए।

2. शिष्टाचार विहीन मनुष्य का जीवन कैसा होता है?

3. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताइये?

प्रश्न 19. अपनी निर्धनता का उल्लेख करते हुए शाला शुक्तमुक्ति केलिये अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को आवेदन पत्र लिखिए।

अथवा

अपने शहर के नगर पालिका अधिकारी को शिकायती पत्र लिखते हुए मोहल्ले में व्याप्त गंदगी को दूर करने का निवेदन कीजिए।

प्रश्न 20. निम्न लिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए?

1. राष्ट्रीयता के आधार
2. जल ही जीवन है
3. कम्प्यूटर शिक्षा का महत्व

4. विद्यार्थी और अनुशासन
5. पर्यावरण संरक्षण

– – – – – –

आदर्श उत्तर

हिन्दी विशिष्ट

कक्षा–X

उत्तर 1. रिक्त स्थान की पूर्ति –

(i) कुटिल

(ii) मलिक मोहम्मद जायसी

(iii) भगिनी निवेदिता

(iv) तत्पुरूष

(v) शोक

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 2. सही विकल्प का चयन :–

1. हंस
2. गुलाब
3. सुश्रुत
4. 26 मात्राएं
5. रसोईघर

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 3. सत्य/असत्य का चयन –

1. सत्य
2. असत्य
3. सत्य
4. असत्य

5. सत्य

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 4. सही जोडियां बनाइयें –

	क		**ख**
1.	बिहारी सतसई	–	बिहारी
2.	हास्य रस का स्थायी भाव	–	ह्मस
3.	निशाचर	–	रात्रि में विचरण करने वाला
4.	निंदा रस	–	हरिकृष्ण प्रेमी
5.	मातृभूमि का मान	–	हरिशंकर परसाई

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए –

1. सुजान सागर के रचियता का नाम घनानंद है।
2. गेहूं और गुलाब पाठ के लेखक का नाम रामवृक्ष बेनीपुरी है।
3. महाकाव्य में जीवन का विस्तृत चित्रण होता है।
4. महर्षि शब्द का संधि विच्छेद महा+ऋषि होगा।
5. पुराणों के अनुसार नर्मदा का उद्‌गम स्थल शंकर जी के पसीने की बूंदें है।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 6. सूरदास भगवान श्री कृष्ण के भक्त है। वे भगवान से विनय करते है कि आप मेरा उद्धार कर दीजिए। सूरदास कहते है कि प्रभु ने कृपा कर मानव शरीर दिया और सांसरिक माया मोह में पड़कर प्रभु को भुला दिया है। सत्संग में जाने में आलस्य करना और सांसारिक माया मोह में पड़कर विषय वासनाओं की ओर

भागना आदि आदतों के कारण ही सूरदास स्वयं को कुटिल खल कामी कहते है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

'निशाकाल से चिर अभिशापित' का प्रयोग चकवा चकवी के लिए किया गया है। चकवा–चकवी को एक दूसरे से अलग रहकर विरह में सारी रात बितानी पड़ती है। बसन्त ऋतु के सुप्रभात में रात्रिकाल से सदा से अभिशापित चकवा–चकवी का करूण क्रंदन अर्थात चीत्कार बंद हो गया है। इन चका–चकवी में सरोवर के किनारे पर शैवाल वृक्षों की हरी दरी पर प्रणय प्रारंभ हो जाता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 7. सम्मानीय होने के लिए केवल पद होना जरूरी नहीं है, केवल पद पाने वाले सम्मान के योग्य नहीं होते। सम्मान पाने के लिये परोपकारी होना जरूरी है। वही व्यक्ति सम्मान पा सकता है जो दूसरों की भलाई के लिये काम करता है। जिसका जन्म केवल दूसरों के हित करने के लिये हुआ हो वे ही सम्मान के सच्चे अधिकारी है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

'लोक कल्याण कामना' से कवि का आशय जन–साधारण की भलाई के लिये काम करना हो। जन साधारण हमेशा समस्याओं से घिरा रहता है हम उनकी समस्याओं को हल करने में सहायक बने। हम उनके सुख दुख में काम आवे।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 8. दो विशेषताएं –

1. इस काल में श्रंगार प्रधान काव्य की रचना हुई।
2. नायिका का नख–शिख वर्णन एवं ब्रज भाषा का प्रयोग।

प्रमुख कवि		**रचनाएं**
बिहारी	–	बिहारी सतसई
केशवदास	–	रामचन्द्रिका

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

छायावाद की विशेषताएं –

1. छायावाद में सूक्ष्म भावनाओं एवं काल्पनिक विचारों को अभिव्यक्ति मिली है।
2. सौन्दर्य, प्रेम और श्रंगार इस काव्य के प्रमुख विषय रहे।
3. यह काव्य जीवन की यथार्थता और वास्तविक संघर्ष से दूर रहा।
4. इस काव्य में प्रकृति का मानवीकरण किया गया।

उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं एवं कोई अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार से दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 9. नाटक और एकांकी में अंतर –

सं.क्र.	**नाटक**	**एकांकी**
1	नाटक में अनेक अंक होते है तथा अनेक भाग होते है।	एकांकी में एक ही वस्तु होती है जो संक्षिप्त होती है।
2	इसकी कथावस्तु लम्बी होती है इसमें अधिकारिक और प्रासंगिक कथावस्तु साथ–साथ चलती है।	एकांकी में एक ही वस्तु होती है जो संक्षिप्त होती है।
3	नाटक में चरित्र का क्रमशः विकास दिखाया जाता है।	एकांकी में पात्रों के व्यक्तित्व का समूचा बिम्ब मिलता है।
4	नाटक के कथानक में फैलाव और विस्तार रहता है।	एकांकी के कथानक में घनत्व रहता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

भारतेन्दु जी से पूर्व में हिन्दी गद्य का व्यवस्थित लेखन नहीं मिलता है। विचारों को सुसम्बद्ध रूप में प्रस्तुत करने वाले गद्य का लेखन खडी बोली के माध्यम से भारतेन्दु जी ने ही प्रारंभ किया। इसलिए उन्हें हिन्दी गद्य का जनक कहा जाता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. मनुष्य और पशु में सबसे बड़ा अंतर बुद्धि का है। मनुष्य एक बुद्विजीवी प्राणी है पशु में सोचने समझने की शक्ति नहीं है। मनुष्य गेहूं को पकाकर खाता है तथा पशु कच्चा खाता है। मानव शरीर में पेट का स्थान नीचेहै, ह्रदय का ऊपर है और मस्तिष्क का सबसे ऊपर है। पशुओं की तरह उसका पेट और मानस समानांतर रेखा में नहीं है। मानव की अपनी एक संस्कृति, सभ्यता होती है पशुओं की कोई संस्कृति, सभ्यता नहीं होती।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

संयम का अर्थ नियंत्रण है। संयम न होने पर अति हो जाती है और कहा गया कि अति सर्वत्र वर्जयते। संसार में संयम अति आवश्यक है बिना संयम के हर प्रकार के भोग हानिकारक होते है। संयम के रहते हुए भोगों का आनंद प्राप्त करना हमारा धर्म है इसलिए इन्द्रिय निग्रह अथवा संयम आवश्यक है। इन्द्रियों के विषय सेवन की अति समाज में अनाचरण की कारक होगी। अतः मानव जीवन एवं समाज को व्यवस्थित बनाए रखने हेतु संयम रखना परम आवश्यक है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 11. बैल को बेचने के लिए जाते हुए मोहन ने शिबू से कहा– ''एक बात बेटा मेरी मानना। बैल किसी भले आदमी को देना जो उसे अच्छी तरह रखे दो–चार रूपये कम मिले तो ख्याल मत करना।''

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

बेटियों में त्याग, तप, गुण धर्म साहस के भाव अपार मात्रा में होते है वे निरंतर देती है ले कुछ नहीं जाती है। वे कुछ चाहती नहीं है, शांत भाव से अपने दायित्व का निर्वाह निष्ठा के साथ करती रहती है। वे धर्म की साकार प्रतिमा होती है। नीति संगत ही उन्हें स्वीकार होता है उनमें आत्मविश्वास तथा साहस भरा होता है। इतिहासमें उनके त्याग तप साहस धैर्य आदि की अनेक गाथाएं विद्यमान है। लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई, भगिनी निवेदिता, सरोजनी नायडू, द्रोपदी, मदर टैरेसा आदि कितनी ही बेटियों ने देश का गौरव बढ़ाया है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 12. खण्डकाव्य की विशेषताएं –

1. खण्डकाव्य में जीवन के एक खण्ड या पक्ष का चित्रण होता है।
2. खण्डकाव्य में एक रस की ही प्रधानता रहती है।
3. खण्डकाव्य में भागों की संख्या सीमित होती है।

खण्डकाव्य रचना – पंचवटी, सुदामा चरित्र।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

रोला छन्द के लक्षण – इसके चार चरण होते है प्रत्येक चरण में 24 मात्राएं होती है तथा 11 और 13 मात्राओं पर यति 3 होती है। इसके अन्त में प्रायः दो गुरू होते है।

उदाहरण – जो जगहित पर प्राण, निछावर है कर पाता।
जिसका तन है किसी, लोकहित में लग जाता।।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 13. अशुद्ध वाक्यों का शुद्ध रूप –

1. सोनू को फेल होने की आशंका है।
2. मुझसे अनेक भूले हुई।
3. मैने गाते हुए लता मंगेशकर को देखा।

अथवा

वाक्य परिवर्तन –

1. नेहा पुस्तक पढ़ो।
2. क्या वह परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया?

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 14. साहित्य परिचय– **हजारी प्रसाद द्विवेदी**

1. **रचनाएंः–** अशोक के फूल, आलोक पर्व, विचार और वितर्क।
2. **भाषा शैलीः–** द्विवेदी की भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है उसमें सरलता, गंभीरता विनोदप्रियता और विद्वता का अभूतपूर्व समन्वय देखने को मिलता है। आप छोटे–छोटे सरल–सरल और काव्यात्मक अभिव्यक्ति वाले वाक्यों में गंभीर बाते करते है।
3. **साहित्य में स्थानः–** हिन्दी साहित्य में आप सांस्कृतिक एवं एतिहासिक निबंधकार के रूप में प्रतिष्ठित है।

5 अंक

अथवा

साहित्य परिचय– **वासुदेव शरण अग्रवाल**

1. **रचनाएंः–** उर ज्योति, माता भूमि, पृथ्वी पुत्र कला और संस्कृति, कल्पवृक्ष।
2. **भाषा शैलीः–** आपकी भाषा प्रौढ़ एवं मंजी हुई तथा तत्सम प्रधान संस्कृतनिष्ठ है। भाषा में मुहावरों के प्रयोग के कारण लाक्षणिकता आ गई है

इनकी रचनाओं में भाषा के मानक रूप के दर्शन होते है।इनके निबंध प्रायः विवरणात्मक एवं कथात्मक शैली में होते है। इनका हिन्दी पर पूर्ण अधिकार सर्वत्र दिखाई देता है।

3. **साहित्य में स्थानः–** भारतीय साहित्य और संस्कृति के गंभीर अध्येता के रूप में आप प्रसिद्ध है।

5 अंक

उत्तर 15. साहित्य परिचय– **तुलीसदास**

1. **रचनाएं :–** रामचरित मानस, दोहावली, कवितावली, गीतावली, पार्वती मंगल विनय पत्रिका आदि।
2. **भावपक्ष :–** भक्ति को ईश्वर प्राप्ति का साधन मानने वाले कविवर तुलसीदास तत्कालीन समाज में भक्ति कालीन कवि के साथ–साथ समाज सुधारक भी माने गये है। इसके लिए उन्होंने काव्य शास्त्र को माध्यम बनाकर हिन्दी साहित्य को श्रेष्ठ रचनाएं प्रदान की।
3. **कलापक्ष :–** भाषा संस्कृत निष्ठ है। अवधि एवं ब्रजभाषा के साथ–साथ कहीं–कहीं अरबी, फारसी, बंगाली, पंजाबी भाषा की लोकोक्तियों का भी प्रयोग मिलता है। मुख्य रूप से अवधि भाषा का प्रयोग हुआ है।
4. **साहित्य में स्थान :–** हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में आप सुविख्यात है। आपकी हिन्दी साहित्य को अनूठी देन युग–युग तक अमर रहेगी।

5 अंक

अथवा

साहित्य परिचय– **रामधारी सिंह दिनकर**

रचनाएं :– कुरूक्षेत्र, उर्वशी, रेणुका, रश्मिरथी, हुंकार।

भाव पक्ष :– इनका काव्य राष्ट्रप्रेम, विश्व बंधुत्व। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति लगाव, दयनीय दशाओं का चित्रण तथा शोषण के प्रति घृणा आदि का

आकर्षक चित्र उपस्थित करने में सफल है मानव जगत की विसंगतियों को आपने बखूबी प्रस्तुत किया है।

कला पक्ष :– आपका शब्द चयन स्वाभाविक है भाषा भावों के अनुरूप है। आपकी प्रतीक एवं बिम्ब योजना सराहनीय है। अलंकार स्वतः ही उपस्थित हो गये है। भाषा में लाक्षणिकता विद्यमान है। मुहावरे व लोकोक्तियां यथा स्थान प्रयुक्त हुई है।

साहित्य में स्थान :– हिन्दी साहित्य में आपको विशिष्ट, स्थान प्राप्त है। आप राष्ट्रीय जागरण एवं सांस्कृतिक विकास के ओजस्वी गायक के रूप में स्थापित है।

5 अंक

उत्तर 16. पद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– पाठ का नाम– विनय के पद। कवि– सूरदास।

प्रसंग :–

व्याख्या :– यहां कवि अपने प्रभु को संबोधित करके यह प्रार्थना करते है कि वे उनके दोषों, अपराधो एवं कुकर्मों पर ध्यान न दे। भगवान को समदरशी कहा जाता है क्योंकि सभी को समान दृष्टि से देखते है चाहे लोहा पूजा में रखा गया हो, चाहे बधिक के धुरे के रूप में जीवों के गले को काटता रहा है। इस प्रकार पारस भेद बुद्धि से काम नहीं लेता वह तो प्रत्येक लोहे को स्वर्ण में बदल देता है। इस उदाहरण को देने का तात्पर्य यह है कि भगवान भी भेद बुद्धि से काम न लें और उस जैसे अवगुणी को भी मोक्ष प्रदान कर दे। पानी चाहे किसी नदी का हो, चाहे किसी गन्दे नाले का हो जब गंगा में मिलता है तो गंगा सबको स्वीकार करके पवित्र बना देती है। जिस प्रकार गंगा अपने में मिलने वाले नदी नाले किसी में अंतर नहीं करती वैसे ही सूरदास जी कहते है कि ब्रम्हा का अंश जीव माया से मिलने के कारण दोषमय हो गया है परंतु प्रभु, आप इन दुर्गुणों से मुक्त भक्त के उद्धार का निश्वय कर दीजिए अन्यथा

आपका समदर्शी का प्रण टल जाएगा और आपकी प्रतिज्ञा की रक्षा भी नहीं हो सकेगी।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

अथवा

पद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– पाठ का नाम– गिरधर की कुण्डलियां, कवि– श्रीगिरिधर जी।

प्रसंग :–

व्याख्या :– धन, दौलत पाक स्वप्न में भी धन जल के समान चंचल है जो एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं रहता इसलिए धन रहते हुए ही संसार में यश अर्जित करना चाहिए। वाणी में मधुरता और व्यवहार में विनयशीलता होनी चाहिए। कवि गिरिधरदास जी कहते है कि यह प्राप्त धन मेहमान की तरह केवल चार दिन अर्थात बहुत थोड़े समय तक अपने पास ठरहता है।

विशेष :– (1) अहंकार से बचने का संदेश दिया गया है।

(2) सरल सुबोध व्यवहारिक भाषा में विषय का प्रतिपादन किया है।

(3) उपदेशात्मक एवं बोधात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

उत्तर 17. गद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– पाठ का नाम– परम्परा बनाम आधुनिकता। लेखक– श्री आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।

प्रसंग :–

व्याख्या :– आधुनिकता और सम्प्रदाय में विरोध है, क्योंकि सम्प्रदाय ठहरे हुए विचारों का नाम है जबकि आधुनिकता लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। जबकि परम्परा और आधुनिकता में विरोध नहीं है, क्योंकि दोनों ही चलने वाली प्रक्रिया है। परम्परा किसी यात्रा के बीच पड़ा हुआ अंतिम चरण है जबकि आधुनिकता उस यात्रा से आगे बढ़ा हुआ चलता हुआ कदम है आधुनिक बौद्धिकता लिये हुए

चलती हुई एक प्रक्रिया है वैसे आधुनिकता का अपना कोई मूल्य नही है उसमें तो मनुष्य के अनुभवों के आधार पर प्राप्त महान आदर्श है, जिन्हें नए संदर्भो में देखा जाता है।

विशेषः– (1) परम्परा यात्रा के बीच का अंतिम पड़ाव है तो आधुनिकता सतत् गतिशील कदम।

(2) सहज सरल एवं विवेचनात्मक भाषा शैली का प्रयोग किया गया है।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

अथवा

गद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– पाठ का नाम– मन की एकाग्रता। लेखक का नाम– श्री पं. बालकृष्ण भारद्वाज।

प्रसंग :–

व्याख्या :– इस जगत में मन की एकाग्रता की समस्या चिरकाल से चली आ रही है। वर्तमान समय औद्योगिकीकरण का है, इससे भौतिक सम्पन्नता का आकर्षण बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के मन में विभिन्न प्रकार की बाते आना स्वाभाविक है उसे लगता है कि आज के अर्थ प्रधान समय में उसे एकनिक मन से पढ़कर ऊंची श्रेणी में परीक्षा पास करनी चाहिए। इससे ही वह ऊंचा पद पा सकेगा। परंतु जब वह पढ़ना प्रारंभ करता है तो उसके मन में क्रिकेट खेलने, सिनेमा देखने अथवा मस्ती करने आदि के विचार आने लगते है इससे उसका मन इधर–उधर भटकरने लगता है। मन की यह चंचलता एकाग्र होकर पढ़ने में लगने वाली बुद्धि को भटका देती है। फलस्वरूप वह पढ़ नहीं पाता है।

विशेष :– (1) आज के भौतिकवादी युग में छात्र के मन में भटकाव के संकट से परिचित कराया गया है।

(2) शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

उत्तर 18. अपठित गद्यांश

1. सारांश – बिना शिष्टाचार वाला मनुष्य समाज द्वारा उपेक्षित होकर अपने जीवन के प्रति उदासीन हो जाता है। कुसंग में पड़ने से उसकी सुख और शांति नष्ट होने से जीवन पतनशील बन जाता है। वह विभिन्न प्रकार से निन्दित होकर मृत्यु को प्राप्त करता है।

2. शिष्टाचार सहित मनुष्य समाज द्वारा तिरस्कृत हो जाता है। समाज से कटकर वह एकांकी जीवन व्यतीत करता है तथा अनेक प्रकार के संकटों से घिरा रहता है।

3. शीर्षक – शिष्टाचार का महत्व।

5 अंक

उत्तर 19. आवेदन पत्र।

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
शिवपुरी

विषयः– शुल्क मुक्ति हेतु आवेदन पत्र।

सविनय निवेदन है कि मेरे पिताजी मजदूरी करके घर का काम चलाते है किन्तु पिछले तीन माह से वे अस्वस्थ है बिना आय के घर की आर्थिक स्थिति पूरी तरह से बिगड़ गयी है। यही कारण है कि मै विद्यालय की प्रवेश शुल्क जमा नहीं कर सका हूँ। अभी पिताजी की हालत में सुधार नहीं है। अतः भविष्य में भी आर्थिक परेशानी रहेगी।

आपसे प्रार्थना है कि मेरी दयनीय स्थिति को ध्यान में रखकर मुझे पूर्ण शुल्क मुक्ति प्रदान करने की कृपा करे। मैं आपका आभारी रहूंगा।

दिनांकः

प्रार्थी

दीपक त्रिपाठी

5 अंक

अथवा

प्रति,

श्रीमान नगर पालिका अधिकारी

नगर निगम, भोपाल

विषयः– मोहल्ले में व्याप्त गंदगी को दूर करने विषयक।

महोदय,

विषयान्तर्गत निवेदन है कि मयूर विहार कॉलोनी वार्ड क्र. 14 में बहुत गंदगी हो गई। जिसे कई महिनों से साफ नहीं किया है। जिसके कारण से अनेक कीटनाशक जीवाणु उत्पन्न हो रहे एवं बिमारी फैल रही है। रास्ते पर अनेक जगह कचरा जमा है जिसमें बहुत गंदगी है।

अतः महोदय जी से पुनः नम्र निवेदन है उक्त कॉलोनी को दूर करने की महती कृपा करेंगे।

दिनांक

भवदीय

समस्त कॉलोनी वासी

(1+3+2 = 5 अंक)

उत्तर 20. **निबंध लेखन–**

राष्ट्रीयता के आधार

प्रस्तावना :– राष्ट्रीयता का महत्व।

राष्ट्र की परिभाषा :– भाषा, जाति, संस्कृति, इतिहास आदि में युक्त जन समूह। स्वतंत्रता को अक्षुण्य बनाये रखने के लिए किये गये प्रयास।

राष्ट्रीयता क अनिवार्य तत्व :– भावात्मक गुण, सामाजिक एकता, राजनैतिक समाज की व्यवस्था। सम्मान सहित स्वाधीनता पूर्वक जीवन यापन की उत्कृष्ट अभिलाषा। समान जातीय भावना, समान धर्म, समान भाषा, आर्थिक स्वार्थों में समानता तथा समान शासन।

राष्ट्रीयता के गुण :– आत्मिक हीनता की समाप्ति तथा स्वाभिमान की जागृति। राष्ट्र का कल्याण, व्यक्ति के संकुचित स्व का परित्याग। विश्व बंधुत्व की भावना का उदय। संकल्पों और विचारों में दृढ़ता। स्वाधीनता के प्रति अडिग आस्था।

आधुनिक युग में राष्ट्रीयता का स्थान :– राष्ट्रीयता अन्तर्राष्ट्रीयता में परिवर्तित। संकुचित स्व पर आधारित राष्ट्रीयता का परित्याग। सह अस्तित्व के सिद्धांत का प्रचार और प्रसार। विश्व एक परिवार।

उपसंहार :– सुख और शांति के लिए संकुचित स्व को छोड़ स्वतंत्र राष्ट्र के लिए राष्ट्रीयता तथा विश्व के लिए अन्तर्राष्ट्रीयता अत्यंत आवश्यक है।

प्रस्तुतिकरण 2 अंक, विषयवस्तु 4 अंक, भाषाशैली 2 अंक, उपसंहार 2 अंक।

उपरोक्तानुसार लिखने पर पूर्ण 10 अंक 10 अंक प्राप्त होंगे

– – – – – –